सवाल-जवाब

घोड़ों की नाल क्यों ज़रूरी?

सवाल - घोड़ों को नाल क्यों लगाई जाती है?

जवाब - घोड़ों को सख्त ज़मीन पर दौड़ना होता है जो उनकी प्रकृति के विरुद्ध है इसीलिए नाल लगाना ज़रूरी हो जाता है। कुदरती तौर पर घोड़े कई परिवेशों से आते हैं - उत्तरी अफ्रीका व मध्य पूर्व के रेगिस्तान, युरोप के जंगल, एशिया के घास के मैदान वगैरह। इन सब परिवेश की एक खासियत यह है कि यहां की ज़मीन मुलायम होती है। इस संदर्भ में घोड़े के पैर की रचना पर भी थोड़ा ध्यान देना ज़रूरी है।

घोड़े के खुर में एक ऊपरी दीवार होती है जो किरेटीन नामक पदार्थ की बनी होती है। इसी पदार्थ से हमारे नाखून बने होते हैं। यह अत्यंत सख्त और संवेदन हीन होता है। नाल इसी में ठोकी जाती है। इस दीवार के अन्दर धंसा हुआ तलवा मुलायम और संवेदनशील होता है। तलवे के पीछे की तरफ एक संवेदन हीन दिल के आकार का बल्ब होता है। यह झटकों को सोखने का भी काम करता है और जब प्रत्येक कदम पर यह दबता है तो खून के प्रवाह में भी मदद करता है।

वैसे तो खुर काफी मज़बूत होता है मगर यह इतना सख्त भी नहीं होता कि घोड़ा ज़मीन को महसूस ही ना कर सके। यदि न घिसे, तो खुर की दीवार नीचे की ओर वृद्धि करती रहती है। यह वृद्धि लगभग 5 मि.मी. प्रति माह की दर से होती है। सामान्य चलने-फिरने के दौरान खुर घिसता रहता है और लगभग उसी दर से बढ़ता भी रहता है। यदि घोड़े को घास के नम मैदान में रखा जाए जो पर्याप्त मुलायम हो तो खुर काफी बढ़ जाता है और जिसकी छंटाई करती पड़ती है। दूसरी ओर यदि उसे सख्त सड़कों पर दौड़ाया जाए तो खुर तेज़ी से घिसता है और जल्दी ही

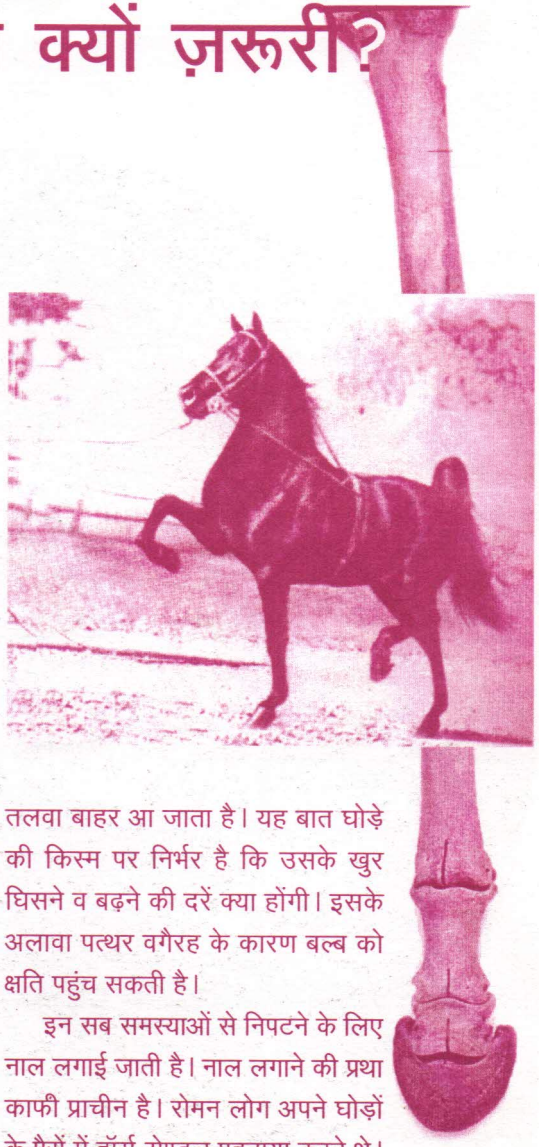

तलवा बाहर आ जाता है। यह बात घोड़े की किस्म पर निर्भर है कि उसके खुर घिसने व बढ़ने की दरें क्या होंगी। इसके अलावा पत्थर वगैरह के कारण बल्ब को क्षति पहुंच सकती है।

इन सब समस्याओं से निपटने के लिए नाल लगाई जाती है। नाल लगाने की प्रथा काफी प्राचीन है। रोमन लोग अपने घोड़ों के पैरों में हॉर्स-सेण्डल पहनाया करते थे। और नालें मात्र घोड़ों को ही नहीं लगाई जाती थीं। कहीं-कहीं बैलों को भी नाल लगाई जाती है। घोड़ों की नाल को समय-समय पर बदलना भी पड़ता है।

(स्रोत विशेष फीचर्स)

* * * * * * * * * * * * * * * * *